

Crisis in Jamia Millia University

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश) मोहतरम वाइसचेयर-मैन साहब, मैं एक बार फिर यहां जामिया मिलिया इस्लामिया का मसला आपके सामने पेश करना चाहता हूं। कई दिन पहले मैंने इस मसले को उठाया था और सरकार से दरखवास्त की थी कि यह बहुत अहम मसला है और 7 हजार स्टूडेंट्स का जो मुस्तकबिल है वह दांव पर लगा हुआ है। इसलिए सरकार इसमें फौरी तौर पर मुदाखलत करे और मामले को हल कराने की कोशिश करे। लेकिन अफसोस की बात यह है कि अभी तक इस पर कोई तबज्जह नहीं है और हालात दिन-ब-दिन खराब होते जा रहे हैं। मुझे अंदेशा है कि अगर हालात अगर हालात इसी तरह बने रहे, आज स्टूडेंट्स हंगर स्ट्राइक पर बैठ चुके हैं स्टाफ काउंसिल का रेजोल्यूशन भी पी. वी. सी. के खिलाफ आ चुका है और हालात दिन-ब-दिन खराब हो रहे हैं। मुझे डर है कि साल भी जाया हो जाएगा और वायलेंस का भी अंदेशा है।

मोहतरम, मैं आपको बताना चाहता हूं कि ये किस्सा सलमान रशदी की एक किताब के सिलसिले में "सडे" में जो एक आर्टिकल छपा उसमें मुस्लिम मुस्लिम लीडर्स के इंटरव्यू लिए गए और उसके अंदर जामिया के प्रो० वाईस चांसलर का एक इंटरव्यू छपा, जिसमें उन्होंने कहा कि सलमान रशदी की किताब से बैन हटा देना चाहिए, उसका कोई फायदा नहीं है। मैं समझता हूं कि हुकुमते हिंद की पालिसी थी, राजीव गांधी ने बैन लगाया था, कांग्रेस पार्टी ने बैन लगाया था और यह इस मुल्क में रहने वाले करोड़ों मुसलमानों के जजबात का मसला था और सारी दुनिया में रहने वाले मुसलमानों का मसला था।

अब जामिया, जो एक माइनोरिटी इंस्टीट्यूशन है, वहां सेकेंड इन कमांड पी०वी०सी० साहब अगर गैरजिम्मेदारी का सवत देते हैं तो मुझे यह देखकर बेहद अफसोस होता है। चूंकि मैं एक जर्नलिस्ट भी हूं, मुझे यह देखकर अफसोस होता है कि सारा नेशनल मीडिया, तमाम जर्नलिस्ट्स 7 हजार स्टूडेंट्स के पीछे हाथ धोकर पड़ गए कि यह डिमांड गलत है। मैं इसको कोई रिलीजियस मसला नहीं मानता। मैं इसको कोई सियासी मसला नहीं मानता लेकिन यह ठीक मानता हूं कि सियासत इसमें दाखिल है और जामिया को सियासत का अखाड़ा बनाने की कोशिश की जा रही है। मैं इसको रिलीजियस इसलिए नहीं मानता कि अगर किसी अखबार में एक ऐसा लेख छपता है जिससे किसी तबके के जजबात मजबूत होते हैं या कोई ऐसा लेख या कोई ऐसी स्पीच या कोई ऐसा स्टेटमेंट जो प्रोवोकेशन की तरफ ले जाता हो, उस पर कानून का इतलाक होता है। 153ए की दफा लगती है उसके ऊपर और उस पर मुकदमा चलाया जाता है।

जामिया के पी०वी०सी० ने एक स्टेटमेंट दिया। मैं उसकी मजहबी अहमियत की बात नहीं कर रहा हूं कि वह सलमान रशदी की किताब के खिलाफ था, लोग उसको दूसरा रूप दे रहे हैं। मैं उसके कानूनी नुस्ते की तरफ जा रहा हूं कि पी. वी. सी. जैसे जिम्मेदार शक्ति के स्टेटमेंट के नतीजे में जामिया के अंदर रिजेंटमेंट हुआ। लड़कों ने स्ट्राइक की, एजिटेशन किया। एक प्रोफेसर की पिटाई हो गई। उसके बाद जामिया को बंद कर दिया गया और वहां वायलेंस का खतरा पैदा हो गया। उसके बाद जहाँ तक मुझे इत्मीन है, दूयूमन

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल]
 रिसोर्स मिनिस्टर हैं थोड़ा डांट पिलाई
 वाइस चांसलर को तो बिना जांच कराए
 यूनिवर्सिटी को खोल दिया। मैं यहां पूरे
 ही बताना चाहता हूं कि जो लोग फीडम
 आफ एक्सप्रेसन की बात करते हैं, फीडम
 आफ स्पीच की बात करते हैं और जिस
 वाइस चांसलर और प्रो० वाइस चांसलर
 के लिए हम सीना तान करके बात कर
 रहे हैं वह इतना बुझदिल है कि जिस
 दिन उन्होंने यूनिवर्सिटी खोली तो उस
 दिन वाइस चांसलर, प्रो वाइस चांसलर
 रजिस्ट्रार डिप्टी रजिस्ट्रार यहां तक कि
 तमाम असिस्टेंट रजिस्ट्रार यूनिवर्सिटी
 में गायब थे और आज चार, पांच, छह
 दिन हो चुके हैं यूनिवर्सिटी खुली हुई है
 लेकिन एक जिम्मेदार जो है यूनिवर्सिटी
 में नहीं जाता। ऐसे बुझदिलों को खड़े
 हो करके आप सपोर्ट करते हैं बहुत से
 लोग। मुझे गर्म आती है कि आप फीडम
 आफ एक्सप्रेसन के नाम पर क्या गालियों
 को सपोर्ट करेंगे? मोहतरम, मैं बार बार
 इस बात को कहा रहा हूं कि इसको
 रिलीजस रंग देने की जरूरत नहीं है,
 यह एक कानूनी मसला है। मैंने एक
 बार पहले भी कहा कि यहां सड़क के
 ऊपर एक रिसा वाला शराब पी लेता है
 तो पुलिस वाले उसके हाथ पैर तोड़ देते
 हैं, मैंने अपनी आंखों से देखा है। लेकिन
 इसके वरक एक डिप्टी कमिश्नर आफ
 पुलिस दिल्ली के अंदर शराब पी करके
 जामा मसजिद के अंदर घुस गया और
 आज तक उसके खिलाफ कोई कार्यवाही
 नहीं हुई। इसका मतलब यह है कि
 सिरफिरा आदमी कोई गलती करे तो
 वह न माफी मांगेगा न उसके खिलाफ
 कोई कार्यवाही होगी। अगर पी०वी०सी०
 ने एक स्टेटमेंट दिया है और उससे

जजाबत मजबूत हुए हैं और सबसे बड़ी
 बात यह है कि एक यूनिवर्सिटी बंद हो
 गई। 7 हजार स्टूडेंट्स का मस्तकबल
 खतरे में पड़ गया। तो क्या वहज है
 कि पी०वी०सी० को तो खुद ही इखलाकी
 तौर पर इस्तीफा दे देना चाहिए।

मोहतरम, मैं यह बताना चाहता हूं
 कि मसला इतना सीधा नहीं है जितना
 समझा जा रहा है। मैं इसकी बुनियाद
 बताना चाहता हूं। आप लोग जानते हैं
 कि अभी तीन ही महीने हुए हैं जामियां
 के अंदर नए वाइस चांसलर आए। ये नए
 वाइस चांसलर साहब जब आए तो यह
 पहला धमाका था जामियां वालों के लिए।
 इसलिए हमारे मौलाना असद मदनो साहब जो
 राज्य सभा के मੈम्बर हैं और वह तबज्जह
 दिला चुके हैं कि जामिया के अंदर पहली
 बार एक काजियामी को आपने वाइस
 चांसलर बनाकर भेजा। अहमदिया फिरके
 का आदमी जिसको हम मुसलमान नहीं
 मानते, वह डिक्लेयर्ड कम्युनिटी है, नान-
 मुस्लिम की, उसको आपने बनाकर भेजा
 मुसलमान के नाम पर। यह पहला धमाका
 था जो आपने जामिया मिलिया को पहला
 शाक दिया। उसके बाद वाइस चांसलर
 साहब के आने के बाद एक इंटरव्यू
 मिला एक अखबार को और उसमें यह
 दावा किया कि जामिया का कोई माइनो-
 रिटी करेक्टर नहीं है। यह दूसरा शाक
 उन्होंने जामिया को पहुंचाया। उसके
 बाद जब कुछ स्टूडेंट्स और कुछ मसावदा
 उनसे मिलने के लिए गए तो उन्होंने
 यह कहा...

उपसभाध्यक्ष (श्री भास्कर अन्नाजी
 मातोबकर) अब खत्म कीजिए ...

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल : बस मैं अभी खत्म कर रहा हूँ। तो उस पर उन्होंने यह कहा कि जामिया के कंस्टीट्यूशन में कहां पर यह लिखा हुआ है कि यहां वाइस चांसलर मुसलमान होगा। कहां लिखा हुआ है कि जामिया की जमान उर्दू होगी। इस तरह की गुप्तगू अभी तीन महीने नहीं हुए हैं हमारे वाइस चांसलर साहब ने शुरू कर दी।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Afzalji, please conclude.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल : इन तमाम बिन्दुओं के बाद जब प्रो वाइस-चांसलर ने एक ऐसा बयान दिया तो जो लावा अंदर ही अंदर पक रहा था मोहतरम वह फूट गया इस मसले को पी.वी.सी. से नहीं जोड़ना चाहिए। इसमें वाइस चांसलर की गैर जिम्मेदारी है। पूरे हाउस ने उस दिन कंडम किया जब उन्होंने युनिवर्सिटी को बंद किया। ऐसे हालात नहीं थे, पुरस्मन एजिटेशन चल रहा था। बातचीत करते अगर तो मसला हल हो जाता। लेकिन उन्होंने युनिवर्सिटी बंद कर दी।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Please conclude now.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल : मैं आखिरी बात और कहना चाहता हूँ। बहुत ज्यादा जनता दल के दो मंत्रियों के खिलाफ बहुत ज्यादा और मचा रहे हैं कुछ लोग। आज इंडियन एक्सप्रेस में पी.वी.सी. ने यह बयान दिया है कि मैं और अब्दुल्ला खान आजमी जामिया में गए और हमने जाकर तकरीर की और वहां लड़कों को प्रवोक किया मैं इसका

डिनार्ड करता हूँ और आपको बताना चाहता हूँ कि उन्होंने यह भी लिखा कि उन्होंने आकर मजहबी तकरीर की। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि सी. आई. डी. से रिकार्ड मंगा लिया जाए। मैंने कोई मजहबी तकरीर वहां नहीं की। मैंने यह कहा कि अगर एक आम आदमी के खिलाफ 153ए के तहत मुकदमा चल सकता और मैंने टेलीफोन पर अर्जुनसिंह जी को भी कहा कि अगर एक आम आदमी के खिलाफ 153 ए के तहत मुकदमा चल सकता है तो जामिया के पी.वी.सी. के एक बयान के नतीजे में जो प्रोवोकेशन हुआ है उसके नतीजे में उनके खिलाफ भी मुकदमा चलना चाहिए। मैं इसको मजहबी मामला नहीं बना रहा हूँ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Please conclude.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल : मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि मोलाना अब्दुल्ला आजमी पर यह इलजाम लगाया जा रहा है कि उन्होंने मजहबी स्पीच दे करके वहां हालात को प्रवोक किया। हकीकत यह है कि उन्होंने यह बताया कि हुजर सलतानल्लाहो अले हे सबल्लम के सिलसिले में मुसलमान बहुत संसिटिव हैं और उन्होंने इसकी कुछ मिसालें दी और उसके बाद यह कहा कि मैं ये मिसालें दे करके सरकार की यह बताना चाहता हूँ कि यह बड़ा अहम मसला है इसको इतना लाइटली न लें।

बल्कि संजीदगी के साथ इस मसले को हल करें। आखिर मैं एक मशविरा दना चाहता हूँ तलबा इस वक्त स्ट्राइक पर है, हंगर स्ट्राइक पर है, ग्रिटिल डेथ पर है। यह बहुत सीरियस मंटर है और कल पालियामेंट खत्म होने जा रही है। मैं जानता हूँ कोई पूछने वाला नहीं होगा यहां पर अगर जामिया में कुछ हो गया तो। मैं सरकार से अपील करना चाहता हूँ कि फौरन मदाखलत करें। सलमान खुर्शीद साहब जो डिप्टी मिनिस्टर हैं वह इस मसले में बीच में पड़े हुए हैं।

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल]

शाहबुद्दीन साहब भी हैं, पी.एम. सईद साहब भी हैं लेकिन मुझे लगता है सरकार का कोआपरेशन उनको नहीं मिल रहा है। इसलिए मजबूर होकर आज "कौमी आवाज" में सफा अल्वल पर सलमान खुशीद साहब का ईटरब्यू शायद हुआ है जो सरासर अर्जुन सिंह साहब के खिलाफ जाता है। इससे पता चलता है कि जामिया के मामले में कांग्रेस में इनफार्मिंग भी चल रही है। मैं आपसे अपील करता हूँ कि जामिया को सियासत का अखाड़ा न बनाया जाय। (व्यवधान) मेरी यह अर्ज है की फोरो तीर पर पी.बी.सी. को वहाँ से कहा जाए कि वह इस्तीफा दें और इस मामले को जल्दी से जल्दी हल किया जाए। (व्यवधान)

श्री محمد افضل عرف م۔ افضل: محترم وائس چیرمین صاحب۔ میں ایک بار پھر یہاں جامعہ ملیہ اسلامیہ کا مسئلہ آپ کے سامنے پیش کرنا چاہتا ہوں۔ کئی دن پہلے میں نے اس مسئلے کو اٹھایا تھا۔ اور سرکار سے درخواست کی تھی کہ یہ بہت اہم مسئلہ ہے۔ اور سات ہزار اسٹوڈنٹس کا جو مستقبل ہے وہ دائرہ برنگنا ہوا ہے۔ اس لیے سرکار اس میں فوری طور پر مداخلت کرے اور معاملے کو حل کرنے کی کوشش کرے۔ لیکن افسوس کی بات یہ ہے کہ ابھی تک اس پر کوئی توجہ نہیں ہے اور حالات دن بہ دن خراب ہوتے جا رہے ہیں۔ مجھے اندیشہ ہے کہ اگر حالات اسی طرح بنے رہے تو۔ آج اسٹوڈنٹ ہنگر اسٹرائک پر بیٹھ چکے ہیں۔ اسٹاف کاؤنسل کا رزلوشن

بھی پی۔وی۔سی۔ کے خلاف آچکا ہے۔ اور حالات دن بہ دن خراب ہو رہے ہیں۔ مجھے ڈر ہے کہ سال بھی ضائع ہو جائیگا اور وائٹنس کا بھی اندیشہ ہے۔

محترم۔ میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ یہ قلعہ سلمان رشدی کی ایک کتاب کے سلسلہ میں سنڈے میں جو ایک آرٹیکل چھپا اس میں مختلف مسلم لیڈرس کے انٹرویو لیے گئے اور اس کے اندر جامعہ ملیہ اسلامیہ کے پرووائس چانسلر کا ایک انٹرویو چھپا تھا جس میں انہوں نے کہا کہ سلمان رشدی کی کتاب سے بین ہٹا دینا چاہیے۔ اس کا کوئی فائدہ نہیں ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ حکومت ہند کی پالیسی تھی۔ راجیو گاندھی نے بین لگایا تھا۔ کانگریس پارٹی نے بین لگایا تھا اور یہ اس ملک میں رہنے والے کروڑوں مسلمانوں کے جذبات کا مسئلہ تھا۔ اور ساری دنیا میں رہنے والے مسلمانوں کا مسئلہ تھا۔

اب جامعہ۔ جو ایک مائنارٹی کا انسٹی ٹیوشن ہے۔ وہاں سیکنڈ ان کمانڈ پی۔وی۔سی۔ صاحب اگر غیر ذمہ داری کا ثبوت دیتے ہیں تو مجھے یہ دیکھ کر بے حد افسوس ہو رہا ہے۔ چونکہ میں ایک جرنلسٹ بھی

ہوں۔ مجھے یہ دیکھ کر افسوس ہوتا ہے۔ کرسارا نیشنل میڈیا۔ تمام جرنلسٹ سات ہزار اسٹوڈنٹس کے پیچھے ہاتھ دھوکہ بٹڑ گئے کہ یہ ڈمانڈ غلط ہے۔ میں اس کو کوئی ریجیمس مسئلہ نہیں مانتا۔ میں اس کو کوئی سیاسی مسئلہ نہیں مانتا۔ لیکن یہ ضرور مانتا ہوں کہ سیاست اس میں داخل ہے۔ اور جامعہ کو سیاست کا اکھاڑہ بنانے کی کوشش کی جارہی ہے۔ میں اس کو ریجیمس اس لیے نہیں مانتا کہ اگر کسی اخبار میں ایک ایسا لیکھ چھپتا ہے۔ جس سے کسی طبقے کے جذبات مجروح ہوتے ہیں۔ یا کوئی ایسا لیکھ یا ایسی اسپیشیا کوئی ایسی اسٹیٹمنٹ جو پرو ووکیشن کی طرف لے جاتا ہو۔ اس پر قانون کا اطلاق ہوتا ہے۔ ۱۹۵۳ء کی دفعہ لگتی ہے۔ اس کے اوپر اور اس پر مقدمہ چلایا جاتا ہے۔

جامعہ کے پی۔ ڈی۔ سی۔ نے ایک اسٹیٹمنٹ دیا۔ میں اس کی مذہبی اہمیت کی بات نہیں کر رہا ہوں کہ وہ سلمان رشدی کی کتاب کے خلاف تھا۔ لوگ اسکو دوسرا روپ دے رہے ہیں۔ میں اسکے قانونی نکتے کی طرف جا رہا ہوں۔ کہ پی۔ ڈی۔ سی۔ جیسے ذمہ دار شخص کے اسٹیٹمنٹ کے نتیجے میں جامعہ کے اندر ردِ تحنٹ ہوا۔ لوگوں نے اسٹرٹنگ کی۔ اسپیشیشن کیا۔ ایک

پروفیسر کی پٹائی ہو گئی۔ اس کے بعد جامعہ کو بند کر دیا گیا۔ اور وہاں وائلینس کا خطرہ پیدا ہو گیا۔ اس کے بعد جہاں تک مجھے علم ہے۔ ہیومن ریسورسز منسٹر نے تھوڑی ڈانٹ پلائی وائس چانسلر کو۔ تو بتا جا چکے کہ اسے یونیورسٹی کو کھول دیا۔ میں یہاں پورے ہاؤس کو بتانا چاہتا ہوں کہ جو لوگ فریڈم آف ایکسپریشن کی بات کرتے ہیں۔ فریڈم آف اسپیک کی بات کرتے ہیں اور جس وائس چانسلر اور پرو وائس چانسلر کے لیے ہم سینہ تان کر کے بات کر رہے ہیں۔ وہ اتنا بزدل ہے کہ جس دن انہوں نے یونیورسٹی کھولی تو اس دن وائس چانسلر۔ پرو وائس چانسلر۔ رجسٹرار۔ ڈپٹی رجسٹرار یہاں تک کہ تمام اسٹنٹ رجسٹرار یونیورسٹی سے غائب تھے۔ اور آج چار۔ پانچ۔ چھ دن ہو چکے ہیں۔ یونیورسٹی کھلی ہوئی ہے۔ لیکن ایک ذمہ دار جو ہے۔ یونیورسٹی میں نہیں جاتا۔ ایسے بزدلوں کو کھڑے ہو کر کے آپ سپورٹ کرتے ہیں بہت سے لوگ۔ مجھے شرم آتی ہے۔ کہ آپ فریڈم آف ایکسپریشن کے نام پر کیا کاریوں کو سپورٹ کریں گے۔ محترم۔ میں بار بار اس بات کو کہہ رہا ہوں کہ اسکو ریجیمس رنگ

دینے کی ضرورت نہیں ہے۔ یہ ایک قانونی مسئلہ ہے۔ میں نے ایک بار پہلے بھی کہا کہ یہاں سڑک کے اوپر ایک رکشہ والا شراب پی لیتا ہے۔ تو پولیس والے اس کے ہاتھ پیر توڑ دیتے ہیں۔ میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے۔ لیکن اس کے برعکس ایک ڈیٹی کشر آف پولیس شراب پی کر کے جامع مسجد کے اندر گھس گیا اور آج تک اس کے خلاف کوئی کارروائی نہیں ہوئی اس کا مطلب یہ ہے کہ سر پھر آدمی کوئی غلطی کرے گا تو وہ نہ معافی مانگے گا نہ اس کے خلاف کوئی کارروائی ہوگی۔ اگر پی۔ وی۔ سی۔ نے ایک اسٹیمٹ دیلے اور اس سے جذبات مجرد ہوئے ہیں۔ اور صوبے بڑی بات یہ ہے کہ ایک یونیورسٹی بند ہوگئی۔ سات ہزار اسٹوڈنٹس کا مستقبل خطرے میں پڑ گیا۔ تو کیا وجہ ہے کہ پی۔ وی۔ سی۔ کو تو خود ہی اخلاقی طور پر استعفیٰ دینا چاہیئے۔

محترم۔ میں یہ بتانا چاہتا ہوں کہ مسئلہ اتنا سیدھا نہیں ہے جتنا سمجھا جا رہا ہے۔ میں اس کی بنیاد بتانا چاہتا ہوں۔ آپ لوگ جانتے ہیں کہ ابھی تین ہی جینے ہوئے ہیں۔ جامعہ کے اندر نئے وائس چانسلر گئے ہیں۔ یہ نئے وائس چانسلر صاحب جب آئے تو یہ پہلا دھماکہ تھا جامعہ والوں کے لیے۔ اس لیے ہمارے مولانا اسعد مدنی صاحب جو راجہ سبھا کے ممبر ہیں وہ۔

توجہ دلا چکے ہیں کہ جامعہ کے اندر پہلی بار ایک قادیانی کو اپنے وائس چانسلر بنا کر بھیجا۔ احمدیہ فرقہ کا آدمی جسکو ہم مسلمان نہیں مانتے۔ وہ ڈکلیئرڈ کمیونٹی ہے۔ نان مسلم کی۔ اس کو آپ نے بنا کر بھیجا۔ مسلمان کے نام پر۔ یہ پہلا دھماکہ تھا آپ نے جامعہ ملیہ کو پہلا شاگ دیا۔ اس کے بعد وائس چانسلر صاحب کے آنے کے بعد ایک انٹرویو ملا ایک اخبار کو اور اس میں یہ دعویٰ کیا کہ جامعہ کا کوئی مائنسٹری ٹیریکٹر نہیں ہے۔ یہ دوسرا شاگ انہوں نے جامعہ کو پہنچایا۔ اسکے بعد جب کچھ اسٹوڈنٹس اور کچھ اساتذہ ان سے ملنے گئے تو انہوں نے یہ کہا...

उपसमाध्यक्ष श्री अन्नाजी साठकर
मासोदकर : आप खत्म कीजिए...

بس میں اسی حکم کو روکا ہوں۔ تو اس

[श्री محمد افضل عرف م۔ افضل]

پڑے ہوں نے یہ کہا کہ جامعہ کے کاسٹی ٹیوشن میں کہاں پر یہ لکھا ہوا ہے کہ یہاں کا وائس چانسلر مسلمان ہوگا کہیں لکھا ہوا ہے کہ جامعہ کی زبان اردو ہوگی۔ اس طرح کی گفتگو ابھی تین جینے نہیں ہوئے ہیں ہمارے وائس چانسلر صاحب نے شروع کر دی... "مداخلت"...

ان تمام چیزوں کے بعد جب

[श्री محمد افضل عرف م۔ افضل]

دوائس جہاں سمر نے ایک ایسا بیان دیا۔
 جو لاڈ اندر ہی اندر پک رہا تھا محترم
 اچھوٹ گیا۔ اس مسئلے کو پی۔ وی۔ سی۔
 نے نہیں جوڑنا چاہیئے۔ اس میں دوائس
 انسلر کی غیر ذمہ داری ہے۔ پورے ہاؤس
 نے اس دن کنڈم کیا جب انہوں نے
 انیورسٹی کو بند کیا۔ ایسے حالات نہیں تھے۔
 پرامن ایجنڈیشن چل رہا تھا۔ بات چیت
 کرتے اگر تو مسئلہ حل ہو جاتا۔ لیکن انہوں
 نے انیورسٹی بند کر دی۔... ”مداخلت“...

† [اردو] محمد افضل عرف م۔ افضل:
 میں آخری بات اور کہنا چاہتا ہوں۔
 بہت زیادہ جنتا دل کے دو ممبران کے
 خلاف بہت زیادہ شور مچا رہے ہیں کچھ
 لوگ۔ آج انڈین ایکسپریس میں پی۔ وی۔
 سی۔ نے یہ بیان دیا ہے کہ میں اور عبداللہ
 اعظمی جامعہ گئے۔ اور ہم نے جا کر تقریر کی
 اور وہاں لوگوں کو پرووک کیا۔ میں اسکا
 کرتا ہوں۔ اور آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ
 انہوں نے یہ بھی لکھا ہے کہ انہوں نے
 اگر مذہبی تقریر کی۔ میں آپ کو بتانا چاہتا
 ہوں کہ سی۔ آئی۔ ڈی سے ریکارڈ مانگ
 لیا جائے۔ میں نے کوئی مذہبی تقریر وہاں
 نہیں کی۔ میں نے یہ کہا کہ اگر ایک عام آدمی
 کے خلاف ۱۵۳ اے کے تحت مقدمہ چل
 سکتا ہے۔ اور میں نے ٹیلیفون پر ارجن سنگھ

کو بھی کہا کہ اگر ایک عام آدمی کے خلاف ۱۵۳
 اے کے تحت مقدمہ چل سکتا ہے۔ تو جامعہ
 کے پی۔ وی۔ سی۔ کے ایک بیان کے نتیجہ
 میں جو پرووکیشن ہوا ہے اس کے نتیجہ میں
 ان کے خلاف بھی مقدمہ چلنا چاہیئے۔ میں
 اسکو مذہبی مسئلہ نہیں بنانا چاہتا ہوں ”مداخلت“

† [اردو] محمد افضل عرف م۔ افضل:
 میں یہ بھی بتانا چاہتا ہوں کہ مولانا عبد
 فغان اعظمی پر یہ الزام لگایا جا رہا ہے کہ
 انہوں نے مذہبی اسپچ دیکر کے وہاں کے
 حالات کو پرووک کیا۔ حقیقت یہ ہے کہ
 انہوں نے یہ بتایا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم
 کے سلسلہ میں مسلمان بہت سینسیو
 ہے۔ اور انہوں نے اسکی کچھ مثالیں دیں
 اور اس کے بعد یہ کہا کہ میں یہ مثالیں دیکر
 کے سرکار کو یہ بتانا چاہتا ہوں کہ یہ بڑا اہم
 مسئلہ ہے اسکو اتنا لائبلٹی نہیں۔ بلکہ
 سنجیدگی کے ساتھ اس مسئلے کو حل کریں۔
 آخر میں ایک مشورہ دینا چاہتا ہوں کہ
 طلباء اس وقت اسٹراٹک پر ہیں ہنگر اسٹراٹک
 پر ہیں۔ انشل ڈیٹھ پر ہیں۔ یہ بہت سیریس
 میٹر ہے۔ اور کل پارلیمنٹ ختم ہونے
 جا رہی ہے۔ میں جانتا ہوں کہ کوئی پوچھنے
 والا نہیں ہو گا یہاں۔ اگر جامعہ میں کچھ
 ہو گیا۔ تو میں سرکار سے اپیل کرنا چاہتا ہوں
 کہ فوراً مداخلت کرے۔ سلمان خورشید صاحب

جوڑی مسٹر ہیں وہ اس مسئلے میں بیچ میں
پڑے ہوئے ہیں۔ شہاب الدین صاحب
بھی ہیں۔ بی۔ ایم۔ سعید صاحب بھی ہیں۔
لیکن مجھے لگتا ہے کہ سرکار کا کو آپریشن
انکو نہیں مل رہا ہے۔ اس لیے مجبور ہو کر
آج "تھو آواز" میں صفحہ اول پر سلطان نور شہ
صاحب کا انٹرویو شائع ہوا ہے۔ جو سرسمر
ارجن سنگھ صاحب کے خلاف جاتا ہے۔
اس سے پتہ چلتا ہے کہ جامعہ کے معاملہ
میں کانگریس میں ان فائنڈنگ چل رہی ہے۔
میں آپ سے اپیل کرتا ہوں کہ جامد کو سیاست
کا اکھاڑ نہ بنایا جائے۔ "مداخلت"
سیری یہ عرض ہے کہ فوری طور پر بی۔ وی۔
سی۔ کو وہاں سے کہا جائے کہ استعفیٰ دیں
اور اس مسئلے کو جلدی سے جلدی حل کیا جائے۔
"مداخلت"

مولانا ابوبکر اللہ خان آجملہ
(uttar प्रदेश) : यह मसला बहुत सेंसिटिव
है। अफजल साहब के इस बयान से
अपने को वाबस्ता करना चाहता हूं।
यह कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान जो
अवतार ओलेमा सूफियों और संतों,
मुकद्दस अवतारों की सरजमीन है, राम,
कृष्ण, नानक और ख्वाजा मुहीनुद्दीन
चिश्ती का रहानी मरकज है यह देश...
(व्यवधान)। सलमान रुशदी की किताब
शैतानी आयात के एक्सपोर्ट पर आजाहानी
एक्स वजीरे आजम जनाब राजीव गांधी ने
बंदिश लगाई थी। यह एक फितना

था। हिन्दुस्तान की धरती पर फितने क्या
कम हैं जो नये-नये फितने पैदा किये जा रहे
हैं। हमारे पास इस मनुहूस किताब पर
बंदिश हटाने की राय देने वालों के दर्जे ने
सलमान रुशदी से भारत की धरती को फिर
एक बार मैदानेजंग के तौर पर मुतखब
कर दिया है। जामिया मिलिया इस्लामिया
में जो हादसा पैसा आया है वह भी
इस सिलसिले की एक कड़ी है। यह साबित
हो गया है कि रुशदी के एजेंटों ने अपने
मनसूबेबंद प्रोग्रामों का आगाज जामिया
मिलिया इस्लामिया में प्रोफेसर प्रो० वाइस
चांसलर मशरुफ हुसैन के जरिये कर दिया
है। ऐसे फितनाकार आदमी को प्रोफेसर
प्रो वाइस चांसलर की जगह से हटाया जाए।
इसने जामिया मिलिया इस्लामिया में
सुलगत माहौल पैदा कर दिया है।
(व्यवधान) इस पर पूरा पूरा ध्यान देना
चाहिए वरना अमनो अमन का माहौल
भारत बच्चों का मुस्तकबिल तबाह और
बर्बाद हो जायेगा।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ सीम अफजल:
एक पी०वी०सी० को बचाने के लिए 7 हजार
स्टूडेंट्स का पूरा मुस्तकबिल दाव पर लगा
रखा है। यह क्या तरीका है। (व्यवधान)

مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: یہ مسئلہ بہت
سینسیٹیو ہے۔ میں افضل صاحب کے
اس بیان سے اپنے کو وابستہ کرنا چاہتا ہوں
کہ ہندوستان جو اتار۔ علما۔ صوفیوں اور
سنتوں۔ مقدس اوتاروں کی سرزمین ہے۔
رام کرشن۔ نانک اور خواجہ معین الدین چشتی
کا روحانی مرکز ہے۔ یہ دیش... "مداخلت"

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Please sit down. Nothing will go on record.

SHRI SUKOMAL SEN: *

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Mr. Sen, nothing is going on record. (Interruptions). Please take your seat. (Interruptions). I have already called Mr. Rahman. (Interruptions). Nothing is going on record. Please resume your seat. (Interruptions).

श्री मोहम्मद खलीलूर रहमान :
(प्रान्ध प्रदेश) : जनाब, वाइस-चेयरमैन साहब, जो स्पेशल मेशन मीम अफजल साहब ने किया है उसकी मैं भरपूर तारीफ करता हूँ। इस वजह से कि जामिया मिलिया का जो मतलबा है वह इतिहाई हस्तास और नाजुक मतलबा है। जैसा कहा गया है, सात हजार तलबा के मुस्तकबिल का दारोमदार उस तदरिती हस्तरे से है जो हिंदुस्तान का कीमती असासा है। इस लिहाज से मैं हुकूमते हिन्द में दखलत करूँगा कि उस मतले को और बढ़ने देने के बजाय जल्दी से जल्दी हल करे। मुझे यह कहते हुए फक्र महसूस हो रहा है कि सलमान रशदी की किताब पर जो सबसे पहले इस्तना आयद किया गया वह हुकूमते हिन्द की तरफ से किया गया। मगर इसके बावजूद वहां पर इतना हंगामा हो रहा है तो हुकूमते हिन्द की तरफ से खामोशी की वजह क्या है, यह मेरी समझ में नहीं आता है। मैं हुकूमते हिन्द में दखलत करूँगा कि वह सबसे पहले अपनी अव्वललीन फुरसत में उस पर तवज्जह करे और वहां पर इतिहाई आम हालत पैदा करे ताकि फिरसे दरसी तादरीस शुरू हो सके।

شری محمد خلیل الرحمن "آندھرا پردیش":
جناب وائس چیرمین صاحب. جو اسپیشل
میشن م. افضل صاحب نے کہا ہے. میں
اس کی بھرپور تائید کرتا ہوں. اس وجہ سے
کہ جامعہ ملیہ کا جو مسئلہ ہے وہ انتہائی حساس
اور نازک مسئلہ ہے. جیسا کہ کہا گیا ہے.
سات ہزار طلباء کے مستقبل کا دار و مدار اس
تدریسی ادارے سے ہے جو ہندوستان کا
قلمی اثاثہ ہے. اس لحاظ سے میں حکومت ہند
سے درخواست کروں گا کہ اس مسئلہ کو اور
بڑھنے دینے کے بجائے. جلدی سے جلدی
حل کرے. مجھے یہ کہتے ہوئے فخر محسوس
ہو رہا ہے. کہ سلمان رشدی کی کتاب پر جو
سب سے پہلے امتناع عائد کیا گیا وہ حکومت ہند
کی طرف سے کیا گیا. مگر اس کے باوجود وہاں
پر اتنا ہنگامہ ہو رہا ہے. تو حکومت ہند
کی خاموشی کی وجہ کیا ہے. یہ میری سمجھ میں
نہیں آتا ہے. میں حکومت ہند سے درخواست
کروں گا کہ وہ سب سے پہلے اپنی اولین
فرصت میں اس پر توجہ کرے اور وہاں
انتہائی عام ماحول پیدا کرے تاکہ پھر سے
درس و تدریس شروع ہو سکے.

श्री सुरे द्रजीत सिंह अहलवालिया
(बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मीम
अफजल साहब ने जो स्पेशल मेशन किया है

”उसके साथ मैं सहमत होते हुए कुछ शब्दों में अपनी बात रखना चाहता हूँ। सरकार के सामने, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूँ कि जामिया मिलिया विश्वविद्यालय एक माइनोरीटी का विश्वविद्यालय है। उस कॅरेक्टर को सैनटन करने के लिए वहाँ एक माइनोरीटी का वाइस-चांसलर और एक प्रो वाइस चांसलर रखा जाता है। इसलिए प्रो-वाइस चांसलर और वाइस-चांसलर ऐसे होने चाहिए जो माइनोरीटीज के हकों और उनके इमोशनस का ख्याल रख सकें। लेकिन ऐसा प्रो-वाइस चांसलर आज तक उस कुर्सी में क्यों बैठा हुआ है, यह मेरा प्रश्न है जो माइनोरीटीज के इमोशनस को नहीं समझता है, उनकी भावनाओं से परिचित नहीं है, जो उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश कर रहा है, वह वहाँ पर क्यों बैठा है? सलमान रणदी ने जो किताब लिखी है वह बेहद बेहदा किस्म की किताब है और उस बेहदगी को देखते हुए भारत सरकार ने उस पर पाबन्दी लगाई है, राजीव गांधी जी ने पाबंदी लगाई। उस पाबन्दी लगी हुई किताब को ठीक कहने वाला प्रो-वाइस चांसलर कैसे उस कुर्सी पर बैठा है, इसको सरकार क्यों बर्दाश्त कर रही है, यह मैं जानना चाहता हूँ। मैं आपके माध्यम से यह मांग करता हूँ कि उस प्रो-वाइस चांसलर को वहाँ से निकाला जाय और वहाँ पर अमन और चैन कायम किया जावे।

”श्री लखवीर अहमद सातारिया : मीम अफजल साहब ने जो स्पेशल मेशन किया है और जिन स्थालात का इजहार किया है और अहलवालिया जी ने जो कुछ कहा है उसके साथ मैं भी आप को एसोसिएट करता हूँ।

شری شیر احمد سلاریہ : میم افضل صاحب نے جو اسپیشل مینشن کیا ہے اور جن خیالات کا اظہار کیا ہے۔ اور اہلو والیہ جی نے جو کچھ کہا ہے اس کے ساتھ میں بھی اپنے آپ کو ایسوسیٹ کرتا ہوں۔

श्री अमृतल समव सिद्दीकी (कण्टिक) : मैं भी इसके साथ अपने आप को एसोसिएट करने हुए यह कहना चाहता हूँ कि इस सिचुएसन को गवर्नमेंट ने बहावा दिया है। यह मसला पोलिटिकाइज हो रहा है। उसको कंट्रोल करने का काम उसका था। सात हजार बच्चों के मुस्तकबिल का सवाल है। वह मुस्तकबिल हम सब को अजीज है।

شری عبدالصمد لقی وکرنالک : میں بھی اس کے ساتھ اپنے آپ کو ایسوسیٹ کرتے ہوئے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس سچویشن کو گورنمنٹ نے بڑھا دیا ہے۔ وہ مسئلہ پائیدگاری پر مبنی ہے۔ اسکو کنٹرول کرنے کا کام اسکا تھا۔ سات ہزار بچوں کے مستقبل کا سوال ہے۔ وہ مستقبل ہم سب کو عزیز ہے۔

श्री बेकल ”उत्साही” (उत्तर प्रदेश) : जनाब, यहाँ पर बुद्धिवाद और गैर-बुद्धिवाद, मजहब और कौम की बात की जा रही है। लेकिन लोगों की मजहब और कौम का फर्क महसूस नहीं होता है तो क्या किया जाय। यहाँ तो नेशन की बात है, एक नेशन के बड़े इदारे की बात है जिसको तबाह किया जा रहा है। जो कुछ अहलवालिया जी ने और मीम अफजल जी और हमारे दोस्तों ने कहा है, ठीक कहा है, बिलकुल प्रो-वाइस चांसलर और वाइस-चांसलर को वहाँ से निकाला जाना चाहिए और इस इदारे को बचाना चाहिए, इसलिए कि उस इदारे से हमारे मुल्क का एक ताबनाक मुस्तकबिल बाबस्ता है। अगर वह इदारा इसी तरह से तबाह हो गया और लड़के इसी तरह से हंगर स्ट्राइक पर बैठ गये तो शौन पड़ेगा और कौन पढ़ाएगा। मैं फिर एक बार मीम अफजल जी के इस स्पेशल मेशन की दिल से तारीफ करते हुए यह कहना मैं चाहता हूँ कि हुकूमत जल्दी से जल्दी कदम उठाये।

[श्री वकल उत्साही]

वरना कल तक सेशन है, उसके बाद कोई पूछने नहीं जाएगा।

श्री बिकल "असाही" "अरीयूरदरिश":
 جناب یہاں پر بدھی داد اور غیر بدھی داد
 مذہب اور قوم کی بات کی جا رہی ہے۔ لیکن
 لوگوں کو مذہب اور قوم کا فرق محسوس
 نہیں ہوتا ہے۔ تو کیا کیا جائے۔ یہاں تو
 نیشن کی بات ہے۔ ایک نیشن کے بڑے
 ادارے کی بات ہے جس کو تباہ کیا جا رہا
 ہے۔ جو کچھ اہلو والدیرتی نے اور م۔ افضل
 صاحب نے اور ہمارے دوستوں نے
 کہا ہے۔ ٹھیک کہا ہے۔ بالکل پرووائس
 چانسٹر اور وائس چانسٹر کو وہاں سے نکالا
 جانا چاہیے۔ اور اس ادارے کو بچانا چاہیے۔
 اس لیے کہ اس ادارے سے ہمارے ملک کا
 کس تا بناسک مستقبل وابستہ ہے۔ اگر وہ
 ادارہ اسی طرح سے تباہ ہو گیا اور لڑکے
 اسی طرح ہنگامہ سازانگ پر بیٹھ گئے تو کون
 بڑے سے کٹا اور کون بڑھائے گا۔ میں پھر
 ایک بار م۔ افضل جی کے اس آپریشن
 کی دل سے تائید کرتے ہوئے یہ کہنا
 چاہتا ہوں کہ حکومت جلدی سے جلدی
 تمام اٹھائے ورنہ کل تک سیشن
 ہے۔ اس کے بعد کوئی پلو چھنے
 نہیں جائے گا۔

Need to formulate a uniform policy
 on Sales Tax and Trade Licence
 of Poppy Husk in all Opium-
 producing States

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश): माननीय
 उपसभाध्यक्ष जी, मैं आप का अभारी
 जो आपने मुझे एक जर्नलस्ट बपले
 को उजागर करने के लिए विशेष उल्लेख
 के माध्यम से बोलने का मौका दिया।

मान्यवर, देश में अफीम की खेती
 पर शतप्रतिशत केंद्रीय सरकार का नियंत्रण
 है। किन्तु केंद्रीय सरकार अफीम के पौधे
 के भूसे को और उसके डोडे के चरे
 जिसको पाँपी हस्क कहते हैं अपने नियंत्रण
 में न रख कर प्रांतीय सरकार के नियंत्रण
 में दे बैठी है। हर प्रादेशिक सरकार
 ने पाँपी हस्क के बारे में अलग-अलग
 तरह का टैक्स लगा रखा है।
 मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर
 प्रदेश भारत के मुख्य अफीम उत्पादक
 प्रांत हैं। तीनों जगह भाजपा की सरकारें
 हैं। इस उत्पादन का बहुत बड़ा दुर्घ-
 योग मध्य प्रदेश की सरकार ने किया है।
 चूंकि मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री मूलतः
 मंदसौर जिले के निवासी हैं, इसलिए वे
 अलिभांति जानते हैं कि पाँपी हस्क का
 व्यापार किस तरह किया जाये या
 करवाया जाये।

मध्य प्रदेश शासन ने पहले तो पाँपी
 हस्क पर विक्रय कर 12 प्रतिशत से
 कम करके 4 प्रतिशत कर दिया।
 इससे कुछ विशेष व्यापारी लाभान्वित हुए।
 इन्हें लाइसेंस देते समय राभ्य सरकार ने
 विशेष कृपा की। इस वर्ष लाइसेंस फीम
 ही 25 हजार रुपये करके सारे पाँपी
 हस्क व्यापार को कुल मिला कर 5-7
 व्यापारियों के सिंडीकेट को सौंप दिया
 गया है। जनचर्चा है कि इस सिंडीकेट
 को मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री का सर्वज्ञात
 राजनैतिक, प्रशासनिक और निजी समर्थन
 प्राप्त है। इसको लोग पटवा सिंडीकेट
 के नाम से भी जानते हैं। इससे भावों
 की प्रतिस्पर्धा अत्यन्त कम हो गई है।
 परिणामस्वरूप मध्य प्रदेश शासन को पाँच
 करोड़ राजस्थान सरकार को 2.50 करोड़
 का नुकसान हो रहा है। आज देश के